टिहरी बांध निर्माण और प्रभावितों के पुनर्वास में स्थानीय पत्र/पत्रिकाओं की स्थिति व भूमिका: गढ़वाल क्षेत्र के टिहरी, उत्तरकाशी एवं देहरादून जनपद के विशेष संदर्भ में

डॉ० राकेश चन्द्र रयाल

सह आचार्य, पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

शोधसार

टिहरी बांध विश्व का 8 वां सबसे बड़ा बांध है। बांध के निर्माण में कई वर्ष लग गए। बांध के निर्माण से व्यवस्थित रूप से स्थापित एक पुराने ऐतिहासिक शहर को जलसमाधि लेनी पड़ी और साथ ही बांध के आस-पास के दर्जनों गांव भी इससे प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं। कई गांवों को खाली कराकर उन्हें देहरादून-हरिद्वार के मैदानी क्षेत्रों में विस्थापित किया गया, एक बड़े स्तर पर लोगों का पुनवार्स किया गया। पुरानी टिहरी का नई टिहरी में पुनर्वास किया गया। बांध निर्माण के विरोध में कई आंदोलन हुए, कई राजनैतिक संगठन व सामाजिक संगठनों ने समय-समय पर बांध निर्माण के विरोध में आंदोलन किए, जिससे बांध निर्माण में बाधाएं उत्पन्न हुई और बांध अपने तय समय पर तैयार नहीं हो पाया। बांध निर्माण में तेजी और प्रभावितों के उचित पुनर्वास के लिए मीडिया की भूमिका ज्यादातर सकारात्मक रही। सरकार, बांध प्रबन्धन, विभिन्न आंदोलित संगठन और प्रभावितों के बीच मीडिया ने सामंजस्य स्थापित करने का कार्य किया। बांध निर्माण के दौरान राज्य में समाचार पत्र-पत्रिकाओं का प्रचलन अधिक था। उस दौरान गढ़वाल क्षेत्र में स्थानीय पत्रकारिता काफी सक्रिय थी, जिसने सभी पक्षों के बीच सामंजस्य स्थापित करके प्रभावितों का उचित पुनर्वास करवाने में सहयोग किया तथा बांध निर्माण में भी सहयोग किया। बांध निर्माण के दौरान राज्य में राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र प्रकाशित नहीं होते थे। सन् 2000 के आस-पास 'अमर उजाला' और 'दैनिक जागरण' का देहरादून से प्रकाशन शुरू हो पाया था। इस शोध पत्र में बांध निर्माण के दौरान राज्य के गढवाल क्षेत्र के उन तीन जनपदों से प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया जो टिहरी बांध निर्माण से प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित थे।

मुख्य शब्द - टिहरी बांध, जनसंचार माध्यम, पत्र-पत्रिकाएं, प्रभावित, विस्थापित, पुनर्वास।

स्थानीय पत्रकारिता : टिहरी बांध एवं पुनर्वास -

भारत में पत्रकारिता के श्रीगणेश का श्रेय एक अंग्रेज जेम्स आगस्टस हिक्की को जाता है, जिसने अंग्रेजी में 29 जनवरी 1780 को 'बंगाल गजट' या 'कोलकट्टा जनरल एडवरटाइजर' समाचार पत्र को कोलकाता से प्रकाशित किया था। हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' है, जिसका प्रकाशन पंडित युगल किशोर शुक्ल ने 30 मई 1826 को किया था। यह साप्ताहिक पत्र था। सरकार का कोप और आर्थिक कठिनाइयों के कारण पंण्डित युगल किशोर शुक्ल को 11 दिसंम्बर 1827 को 'उदन्त मार्तण्ड' बन्द करना पड़ा। यद्यपि हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत सन् 1826 में 'उदन्त मार्तण्ड' द्वारा कोलकाता से हो चुकी थी, लेकिन हिन्दी क्षेत्र से हिन्दी पत्रकारिता सन् 1867 में प्रारम्भ हो सकी। उत्तराखण्ड की पत्रकारिता सन् 1868 में हिन्दी-उर्दू में प्रकाशित समाचार पत्र 'समय विनोद' से प्रारम्भ हुयी। यह कदाचित् सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्र से देशी भाषा या हिन्दी का पहला समाचार-पत्र था।

पत्रकारिता एवं जन आन्दोलन का चोली-दामन का साथ रहा है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय से वंचित लोग सांर्ष का रास्ता ढूंढते हैं तथा व्यवस्था को बदलते समय के साथ, जन भावनाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक आंदोलन की जड़ उसके अपने समाज में होती है। जन आंदोलन समाज में परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। पत्रकारिता इसको आगे बढ़ाती है। वह जन आंदोलनों को वैचारिक शक्ति प्रदान करती है और उन्हें सकारात्मक दृष्टि देकर उनकी सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। चूंकि पत्रकारिता का स्वभाव जनोन्मुखी है, इसलिए पत्रकारिता की इनमें अर्थात् जन आंदोलनों में भागीदारी को नकारा नहीं जा सकता। प्रतिबद्ध पत्रकार और पत्र जन आंदोलनों का हथियार होना अपना गौरव समझते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् गढ़वाल में उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन, भूमिहीन आंदोलन, शराब विरोधी आंदोलन हुए। सन् सत्तर के दशक में उत्तराखण्ड में पृथक विश्वविद्यालय के लिए आंदोलन चलाया गया तथा सन् 1973-74 में चिपको आंदोलन की शुरूआत हुई थी, जो कि बाद में व्यापक जनांदोलन बन गया था। पर्यावरण व बांध विस्थापितों की समस्याओं को लेकर क्षेत्रवावसियों ने टिहरी में लम्बे समय तक आंदोलन किया। सन् 1994 में आरक्षण के विरोध को लेकर शुरू हुए आंदोलन का पृथक उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन में परिवर्तित होकर एक अभूतपूर्व आंदोलन का स्वरूप ग्रहण करना और पूरे पर्वतीय अंचल

को आंदोलित करके जन-जन को उसमें भागीदार बनने के लिए व्यग्र कर देना, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। निश्चय ही इस आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका के जो दर्शन लोगों ने किये उसने आम जन को पत्रकारिता का और भी कायल बना दिया। गढ़वाल के क्षेत्रीय हिन्दी समाचार पत्र/पत्रिकाएं इसमें अग्रणी एवं प्रभावकारी भूमिका के लिए तत्पर दिखाई दिए।

टिहरी बांध निर्माण, न केवल भारत में अपितु एशिया में भी एक बहुत बड़ा बांध निमार्ण कार्य था जिससे एक बहुत बडे भूखण्ड के साथ बड़ी संख्या में लोग प्रभावित होने वाले थे। इसके फलस्वरूप पुनर्वास की विकट समस्या पैदा हो गयी थी। पुनर्वास-विस्थापन की समस्याओं के साथ-साथ बांध विरोध ी आन्दोलनों को भी उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में समाचार पत्र/पत्रिकाओं ने काफी अधिक प्रकाशित किया।

टिहरी बांध निर्माण का कार्य प्रारम्भ होने से लेकर पूर्ण होने तक बांध क्षेत्र ही नहीं अपितु बांध निर्माण से इसके प्रभावितों के विस्थापन को लेकर चिन्ताए तथा आंदोलन होते रहे। बांध निर्माण से एक धार्मिक/ऐतिहासिक शहर टिहरी तो डूब ही रहा था साथ ही टिहरी-उत्तरकाशी जनपदों के कई हिस्से भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहे थे। यहां के पत्रकारों ने बांध निर्माण शुरू होने की चर्चाओं से लेकर बांध निर्माण कार्य पूर्ण होने तक बांध निर्माण से प्रभावित विस्थापितों की जनभावनाओं तथा समस्याओं को समय-समय पर अपने पत्र/पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित किया।

टिहरी बांध निर्माण काल में बांध के विरोध में हुये आन्दोलन हो या विस्थापितों के उचित पुनर्वास व मुआवजा के आन्दोलन हो, यहां की पत्रकारिता ने इनकी कवरेज को पर्याप्त रूप में महत्व दिया है जिसके चलते कुछ हद तक विस्थापितों की उचित पुनर्वास व मुआवजे की मांग सफल भी हो पायी हैं। टिहरी बांध निर्माण परियोजना के प्रारम्भ होने के पश्चात् गढ़वाल क्षेत्र से अनेकों समाचार-पत्र/पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इनमें कुछ तो अल्पकालीन ही रहे जबकि अनेकों निरन्तर प्रकाशित हो रहे। यहां पर गढ़वाल क्षेत्र के टिहरी जनपद के साथ उत्तरकाशी और देहरादून जनपद से प्रकाशित समाचार-पत्र/पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तीनों जनपदों से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका बांध निर्माण और प्रभावितों के उचित पुनर्वास में काफी महत्वपूर्ण रही है।

बांध निर्माण के दौरान टिहरी, उत्तरकाशी और देहरादून से प्रकाशित समाचार पत्र/पत्रिकाओं का संक्षिप्त विवरण-

टिहरी गढ़वाल

प्रकाशन का वर्ष	*समाचार पत्र/पत्रिका का नाम*	*आवर्ती*	*प्रकाशन स्थल*	*भाषा*
1967	नव जागरण	सा0	मुनिकीरेती	हिन्दी
1972	शैल शिखर	''	टिहरी	''
1973	टिहरी टाइम्स	''	''	''
1974	कर्म युग	''	नरेन्द्र नगर	''
1975	तरुण हिन्द	''	मुनिकीरेती	''
1978	हिमालय और हम	''	टिहरी	''
1983	सर्ग माथा	पा0	''	''
1983	हिम प्रवक्ता	सा0	नरेन्द्र नगर	''
1985	त्रिहरि	पा0	''	''
1986	राज प्रवक्ता	सा0	''	''
1987	भागीरथी किनारे	''	टिहरी	''
1990	हिमाद्री गौरव	''	मुनिकीरेती	''
1992	पर्वताचंल	सा0	मुनिकीरेती	''
1992	गढ़ निनाद	पा0	टिहरी	''
1995	सुरकण्डा टाइम्स	सा0	मुनीकीरेती	''
1995	दैनिक शिखर संदेश	दैनिक	नई टिहरी	''
1995	हिमालय की शक्ति	सा0	''	''
1999	सुरकण्डा समाचार	सा0	चम्बा	''
2000	उत्तराखण्ड़ आजकल	मा0	''	''
2005	अटल भागीरथी का उत्तरांचल	सा0	नई टिहरी	''

उत्तरकाशी

प्रकाशन का वर्ष	*समाचार पत्र/पत्रिका का नाम*	*आवर्ती*	*प्रकाशन स्थल*	*भाषा*
1973	गढ़ रैबार	सा0	उत्तरकाशी	हिन्दी
1974	पर्वत वाणी	सा0	''	''
1977	अभिनव गढ़वाल	पा0	''	''

1978	काशी दर्पण	मा0	''	''
1982	वीर गढ़वाल	सा0	''	''
1983	हिम तरंगिणी	त्रै. मा0	''	संस्कृत
1988	उत्तरीय आवाज	सा0	''	हिन्दी
1989	ज्वलंत प्रकाश	पा0	''	''
1992	वरणावत टाइम्स	''	''	''
1993	पहाड़वासी	सा0	''	''
1994	भूख (साहित्यिक)	त्रै. मा0	''	''
1996	रवांई मेल	''	पुरोला	''
2002	गंगा-यमुना की पुकार	''	उत्तरकाशी	''

देहरादून

प्रकाशन का वर्ष	*समाचार पत्र/पत्रिका का नाम*	*आवर्ती*	*प्रकाशन स्थल*	*भाषा*
1960	पर्वतीय संस्कृति	मा0	देहरादून	हिन्दी
1961	नव भारत	सा0	''	''
1963	गढ़वाल	पा0	''	''
1964	सीमान्त प्रहरी	सा0	मसूरी	''
1967	द नार्दन पोस्ट	पा0	देहरादून	अंग्रेजी
1968	युवा पीढ़ी	''	''	हिन्दी
1971	दून पोस्ट	''	''	''
1972	मानस सन्देश	त्रै0	''	''
1974	दून दिवाकर	सा0	''	''
1975	हिमालय पोस्ट	''	''	अंग्रेजी
1978	पर्वतीय ग्राम	''	ऋषिकेश	हिन्दी
1980	अमर उजाला	दै0	देहरादून	''
1980	रीजनल एक्सप्रेस	पा0	''	''
1980	शक्ति परीक्षण	सा0	''	''
1980	पछवा दून टाइम्स	पा0	''	''
1982	दून द्वार	सा0	''	''
1985	द्रोण भूमि	''	''	''
1985	दून स्टार	''	''	''
1985	प्रधान टाइम्स	दै0	''	''
1986	उत्तरांचल वाणी	''	''	''
1987	गढ़ ऐना	''	''	गढ़0
1987	बद्री-केदार	सा0	''	हि0/अं0
1989	गढ़ दुनिया	''	''	हिन्दी
1989	गढ़ गाथा	''	''	''
1989	गढ़वाल एक्सप्रेस	''	''	''
1989	उत्तरा टाइम्स	''	''	''
1989	गढ़वाल दर्पण	''	''	''
1992	शिखर सन्देश	दै0	''	''
1992	घाटी का सन्देश	सा0	''	''
1992	द्रोण एक्सप्रेस	''	''	''

1992	उत्तराखण्ड राजकाज	''	''	''
1992	दिशा सन्देश	''	''	''
1993	ग्रीन हिल्स	''	''	''
1993	दून उजाला	सां0/दै0	''	''
1993	अलकनन्दा समाचार	सा0	''	''
1993	गढ़वाली धै	''	''	गढ़0
1994	उत्तरांचल अखबार	''	''	हिन्दी
1994	गढ़ दर्पण	''	''	''
1994	देहरादून टाइम्स	दै0	''	''
1994	समय साक्ष्य	सा0	''	''
1995	हिमालय दर्पण	दै0	''	''
1995	गढ़वाल दर्शन	सा0	''	''
1996	पल-पल की खबर	''	''	''
1996	हिम सवेरा	''	''	''
1998	रन्त-रैबार	''	''	गढ़0
1998	न्यूज प्वाइन्ट	''	''	हिन्दी
1999	पर्वतीय बिगुल	''	मसूरी	''
2001	बरामासा	त्रै.मा0	देहरादून	''
2001	उत्तरांचल एक्सप्रेस	सा0	''	''
2001	पर्वत जन	मा0	''	''
2002	दिव्य उत्तरांचल	सा0	''	''
2003	सलूजा एक्सप्रेस	''	''	''
2003	हिमालय गौरव उत्तरा0	''	''	''
2003	मैदानी आवाज	पा0	ऋषिकेश	हि0/अं0
2004	लोक गंगा	मा0	गुमानीवाला	हि0/अं0

गढ़वाल की पत्रकारिता सन् 1962 से 2005 तक काफी प्रगतिशील रही है। इस कालावधि में गढ़वाल से उन अखबारों का श्रीगणेश हुआ, जो सही अर्थों में उत्तराखण्ड़ के दु:ख-दर्द को समझते थे और उत्तराखण्ड़ की माटी का रंग पहचानते थे। इन अखबारों ने सदैव ही उत्तराखण्ड़ से जुड़े प्रश्नों को प्राथमिकता के साथ रखा और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ उन पर लिखा जैसे- मसूरी से सीमान्त प्रहरी, दमामा, मसूरी सन्देश, कमेन्टेटर, देहरादून से जन लहर, हिमानी, देहरा क्रानिकल, देहरा पत्रिका, विटनेश, यमुना किनारे, उत्तरांचल, दूनवाणी, हिमालय पोस्ट, हिमालय स्टार, जंजीर, दीवार, दून गार्ड, द नार्दन पोस्ट, दून दर्शन, डोईवाला से उपमन्यु, ऋषिकेश से हिमालय की आवाज, टिहरी से टिहरी टाइम्स, तरूण हिन्द, उत्तरकाशी से 'पर्वतवाणी' गढ़ रैबार। इधर गोरखाली और गुरूमुखी में भी अखबार निकले। उर्दू में देहरादून से रहनुमा-ए-आदाब, शहादत, जुम्बिस, अखबार निकले।

इस प्रकार टिहरी बांध निर्माण के दौरान गढ़वाल क्षेत्र में कई समाचार पत्र/पत्रिकाएं प्रकाशित होते थे। इन पत्र/पत्रिकाओं ने टिहरी बांध निर्माण और निर्माण से प्रभावितों के विस्थापन व पुनर्वास को लेकर उत्पन्न समस्याओं को काफी जगह दी।

निष्कर्ष

जनसंचार का अर्थ जन के मध्य संचार, संवाद होना। जनसंचार के तहत एक बडे वर्ग के मध्य सूचनाओं, भावनाओं, विचारों का आदान प्रदान होता है, ज्ञान का आदान प्रदान होता है। समाचार पत्र-पत्रिकाएं जनसंचार के प्रभावी माध्यम हैं। भारत के संदर्भ में यदि बात करें तो भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से लेकर आज तक के सभी राष्ट्रीय/स्थानीय स्तर के आंदोलनों में समाचार पत्र-पत्रिकाओं की विशेष भूमिका रही है। टिहरी बांध निर्माण का कार्य एक बहुत बड़ा कार्य था, बांध के निर्माण से जहां एक ऐतिहासिक शहर का डूबना तय था वहीं शहर के आस-पास के कई गावों को भी बांध से निर्मत झील में डूबना था। दर्जनों गांव बांध निर्माण से प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो रहे थे जिसके चलते हजारों लोगों का पुनवार्स किया जाना था। बांध निर्माण से प्रभावित जनमानस अपनी जन्मभूमि, अपनी माटी को छोड़ने को तैयार नहीं थे, समय-समय पर उनके द्वारा बांध निर्माण का विरोध किया जा रहा था। कई सामाजिक संगठन प्रभावितों की पीडा को लेकर आंदोलित थे, बांध निर्माण से पर्यावरण को हो रही क्षति को लेकर पर्यावरणविद भी बांध का विरोध कर रहे थे। प्रभावित भी अपने उचित पुनर्वास को लेकर समय-समय पर आंदोलित होते रहे। इन तमाम आंदोलनों को सरकार और बांध प्रबन्धन तक पहुंचाने में स्थानीय मीडिया यानि स्थानीय समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बांध निर्माण के दौरान टीवी समाचार चौनल, सोशल मीडिया नहीं थे, यहां तक कि राष्ट्रीय

स्तर के समाचार पत्र भी यहां से प्रकाशित नहीं होते थे, ऐसी स्थिति में स्थानीय स्तर पर प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने टिहरी बांध निर्माण और प्रभावितों के उचित पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बांध निर्माण वाले जनपद टिहरी तथा टिहरी जनपद से लगे उत्तरकाशी और देहरादून जनपदों से प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिकाओं की इसमें मुख्य भूमिका देखी गई।

सन्दर्भ सूची:

1. भनावत, संजीव, (2000)- पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स जयपुर, थर्ड ऐडिशन।
2. मेहता, डी0 एस0, (1979)- मॉस कम्युनिकेशन एण्ड जर्नेलिज्म इन इण्डिया, एलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. वैदिक, वेदप्रताप, (1992)- हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, हिन्दी बुक सेंटर 4/5 बी आसफ अली रोड़, नई दिल्ली, भाग-1।
4. पाठक, शेखर (2001) - 'पहाड' अंक -10।
5. बुड़ाकोटी, पद्मेश (2007)- जन आंदोलनों में क्षेत्रीय समाचार-पत्रों की भूमिका: एक अध्ययन (गढ़वाल के विशेष संदर्भ में), शोध ग्रन्थ।
6. सकलानी, शक्ति प्रसाद: (2004)- उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, उत्तरा प्रकाशन, टी कैम्प, रूद्रपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।
7. माटू, संगठन (2002)- ''बोलती खबरें/आकंड़े'' माटू संगठन द्वारा प्रकाशित टिहरी बाँध ???।
8. नौटियाल, भगवती प्रसाद, (2006)- हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियां और दिवंगत प्रमुख पत्रकार, विन्सर पब्लिकेशन, डिसपेन्सरी रोड देहरादून।